Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 4854885

Roll No. 23081000409
Total Mark 48/75.00

Exam BACHELOR OF ARTS_DEC-2023
Subject A010101T - HINDI KAVYA

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	2/5						
1B	3/5						
1C	3/5						
1D	3/5						
1E	3/5						
1F	3/5						
1G	3/5						
1H	3/5						
1I	3/5						
2	12/15						
3	NA/15						
4	NA/15						
5	NA/15						
6	NA/15						
7	10/15						
8	NA/15						
9	NA/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam: 11/12/23 Shift: I Room No.: 34
Paper Code: A010101T Subject: Hindi Year/Sem: Ist Sem
Name of Candidate: Shivani prajapati
Roll No.: 2 3 D 8 1 0 0 0 4 0 9

Signature of Candidate: शिवानी प्रजापति
Signature of Invigilator
COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures — Max. Marks
Total Marks in Words

A 0 1 0 1 0 1 T
Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course: B.Sc
Session: 2023-24 Year/Semester: Ist
Subject Name: Hindi
Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code: A 0 1 0 1 0 1 T

Exam Date: 11 - 12 - 23

Name of Candidate: SHIVANI PRAJAPATI

Father's Name: SANJAY KUMAR

महाविद्यालय का कोड
College Code: A U - 0 3

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code: A U - 0 3

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam: संस्थागत Regular ● भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex-Student ○ व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
4854885

A 0 1 0 1 0 1 T
Paper Code

नामांकन संख्या
Enrollement Number: C S J M A 2 3 0 0 0 0 0 3 8 5 2

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 3 D 8 1 0 0 0 4 0 9

पेपर कोड Paper Code: A 0 1 0 1 0 1 T

Signature of Candidate: shivani

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पत्र के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. कॉलम में भरे जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken the circles completely.

Correct Method: ① ● ③ ④

Incorrect Method: ✓ ⊗ ◉ ❹

4. Make no Stray marks on this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैलकुलेटर ले जाने की अनुमति होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसकी परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त पत्रक नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Subjec Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

Paper Code A 0 1 0 1 0 1 T

1

प्रश्नोत्तर सं॰ - 1 का (ग)

उत्तर -(ग) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार रीतिकाल का समय संवत 1700 से 1900 विक्रम संवत तक है। रीतिकाल का अन्य नाम श्रृंगारकाल है। विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने रीतिकाल को श्रृंगारकाल कहा है क्योंकि इसमें श्रृंगारपरक रचनाओं की प्रधानता है। रीतिकाल को तीन भागों में विभाजित किया गया है-

1- रीतिबद्ध
2- रीतिमुक्त
3- रीतिसिद्ध

1- रीतिबद्ध काल = रीतिबद्ध काल में श्रृंगार परक रचनाओं की अधिकता है इन्होंने काव्यगत नियमों के आधार पर अपने काव्य की रचना की है। इसमें नायक -नायिकाओं के भेद अलंकार का वर्णन मिलता है।

2- रीतिसिद्ध = रीतिकालीन विकास के युग में दूसरा स्थान रीतिसिद्ध कवियों का है। इन्होंने बहुत ही अच्छे ढंग से अपने काव्य में इसका उल्लेख किया है।

3- रीतिमुक्त काल = रीतिकालीन विकास के युग में तीसरा चरण रीतिमुक्त का है। इन्होंने काव्यगत नियमों का विरोध किया है। इन पर न तो नियमों का दबाव था ना आश्रयदाताओं की रुचियों का दबाव था।

Do Not Write anything in this Portion

प्रश्नोत्तर सं॰ - 1 का (ख)

द्विवेदी युग का समय 1900 से 1918 तक माना गया है। महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इसका नाम द्विवेदी युग रखा गया। द्विवेदी युग में राष्ट्रीयता का वर्णन किया गया है किस प्रकार कवियों की रचनाओं में राष्ट्रीयता बहुत ही प्रबल है। इनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता कूट-कूट कर भरी है। इस युग के कवि अपने देश से अत्यन्त प्रेम करते है।
द्विवेदी युग की विशेषताएँ निम्न-लिखित है-

1- देश-प्रेम की प्रधानता= इस युग की रचनाओं में देश प्रेम का वर्णन मिलता है।

2- राष्ट्रीयता= इस युग के रचनाकारों में राष्ट्रीयता कूट-कूट कर भरी है।

3- गीतिकाव्य की प्रधानता= द्विवेदी युग में गीतिकाव्य की प्रधानता है। इन्होंने गीतों के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त किया।

4- खड़ीबोली का प्रधानता= इस युग के रचनाकारों ने खड़ीबोली का प्रयोग अपने काव्यों में किया है।

A O I O I O I T

प्रश्नोत्तर सं-1 का 3 (ङ)

छायावादी का समय सन 1919 से 1922 तक माना गया है। छायावादी के चार स्तम्भ निम्न लिखित हैं - महाकवि महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला", जयशंकर प्रसाद है। इस युग की रचनाओं में राष्ट्रीयता की प्रबल भावना देखने को मिलती है। महादेवी वर्मा ने अपने काव्य में खड़ीबोली का प्रयोग किया है। इन्होंने मीरा के समान अपने काव्यों में विरह वर्णन किया है। ~~मर्मश~~ ममता दोनों में समान होने के कारण मीराबाई के समान महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा कहा गया। जयशंकर प्रसाद भी अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व के है। जयशंकर प्रसाद ने खड़ीबोली का प्रयोग अपने काव्यों में किया गया। जयशंकर प्रसाद जब छोटे थे तो इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया इनका पालन पोषण इनके बड़े भाई शम्भूजी ने किया। इन्होंने स्वाध्याय से हिन्दी, फारसी गुजराती आदि भाषाओं का गहन अध्ययन किया।

छायावादी कवियों की निम्न लिखित काव्यकृतियाँ-

महादेवी वर्मा= नीहार, रश्मि नीरजा आदि।
जयशंकर प्रसाद= कामायनी, झरना लहर आदि।
सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"= परिमल, अनामिका आदि
सुमित्रानन्दन पंत= वीणा, पल्लव, गुंजन आदि।

Paper Code
A 0 1 0 1 0 1 T

4

प्रश्नोत्तर सं॰ - 1 का उत्तर

हिन्दी के प्रयोगवाद काव्य सन् 1943 से 1953 तक है। प्रयोगवाद की आधार शिला अज्ञेय ने रखी। इन्होंने चार तार सप्तक का प्रकाशन किया। पहला तार सप्तक 1943 ई॰ में प्रकाशित किया गया। दूसरा तार सप्तक का प्रकाशन 1951 ई॰ में हुआ था। तीसरा तार सप्तक का प्रकाशन 1959 ई॰ में हुआ था। चौथा तार सप्तक का प्रकाशन 1979 ई॰ में हुआ था। प्रयोगवाद कवियों ने खड़ीबोली में काव्य रचना की।

प्रयोगवाद की विशेषताएँ निम्नलिखित है-

1- घुटन, कुण्ठाओं का चित्रण।
2- फायड के प्रभाव से नग्न यौन चित्रण।
3- अति यथार्थ
4- पलायन, विरोध का चित्रण

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code
A01010 1T

प्रश्नोत्तर सं०- 5, क (ह)

अमीर खुसरो का जन्म सन् 1255 में हुआ था। इनका जन्म एटा जिले के पटियाली गाँव में हुआ था। इन्होंने जनता के मनोरंजन के लिए पहेलियाँ लिखि है। इन्होंने पहली बार खड़ीबोली का प्रयोग अपने काव्य में किया। इन्होंने अनेक रचनाएँ की थी। ये अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व के थे। इनकी रचनाएँ अत्यन्त प्रभावशाली है। अमीर खुसरो की खालिकबारी एक शब्दकोश है जिसमें हिन्दी, उर्दु, पंजाबी, फारसी आदि भाषाओं के शब्दकोश देखने को मिलते है। इनके गुरु का नाम हजरत निजामुद्दीन औलिया था। इनके गुरु निजामुद्दीन औलिया थे और तबला का आविष्कार किया। ये अपने गुरु से अत्यन्त प्रेम करते थे। इन्होंने अपने गुरु के सम्बन्ध में अनेक रचनाएँ लिखि है। यह अपने गुरु को प्रियतम के समान मानते थे यह इनके बिना जीवित तक नहीं रह सकते थे। इनकी अनेक रचनाएँ देखने को मिलती है।

जैसे- खुसरो की पहेलियाँ, खालिकबारी, मुकरियाँ आदि इनकी रचनाएँ है।

अत: यह खड़ीबोली के पहले कवि माने जाते है

Paper Code A 0 1 0 1 0 1 T

प्रश्नोत्तर सं०- 1 का (ज)

"मोचीराम" सुदामा प्रसाद पाण्डेय "धूमिल" द्वारा रचित है। इसमें मोचीराम एक मोची होता है तथा इन्होंने मोचीराम का वर्णन अपनी कविता में किया था। मोचीराम द्वारा अपने अनुभव को सुदामा प्रसाद पाण्डेय "धूमिल" को बताया जाता है वह अत्यन्त अनुभवी व्यक्ति होते है। सुदामा प्रसाद पाण्डेय अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्ति है इन्होंने अपनी अपनी कविता में मोचीराम का मार्मिक वर्णन किया गया है।

मोचीराम जूता सिलता है वह कहता है कि कभी-कभी लोग अपने जूतो को इतना सिलवाते है कि इसमें इतनी भी जगह नहीं बचती है मोचीराम लोगों को सलाह देता है कि उन्हें नये जूते खरीद लेने चाहिए। तब एक अजीब आदमी वहाँ से निकलता है वह लोगों से बहुत काम करवाता है। फिर जब रूपये देने की बारी आती है तो इसमें बहुत ऐंठ होता है।

Paper Code A 0 1 0 1 0 1 7

प्रश्नोत्तर सं.- 1 का (अ)

गोपाल दास नीरज अपने युग के बहुत प्रभावी व्यक्ति थे उन्होंने अपने गीतों के माध्यम से लोगों को सदा गतिमान रहना चाहिए उन्हें उन्नति करनी चाहिए। वह तूफानों में भी आगे चलते है चाहें कितनी ही परेशि परेशानियाँ हो हमें अपने कदमों को निरन्तर गतिशील रखना चाहिए। वह कहते हैं कि अगर मेरे मार्ग में कठनाईयाँ हो तो मेरे पैर भी आगे बढ़ते रहते थमते है। अपने निरन्तर आगे बढ़ता रहना चाहिए चाहे कितनी भी परेशानियाँ आए या लोग आपको गिराने का प्रयास करें। लोगों का काम ही है कहना हमें अपने कर्म में लग्न हो आगे बढ़ते रहना चाहिए चाहें कितनी ही परेशानियाँ क्यों न आए।

प्रश्नोत्तर सं.- 1 का (ब)

आदिकाल का समय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार संवत 1050 से 1375 विक्रम संवत तक है। आदिकाल के कई नाम हमारे सामने आते हैं जैसे रामचन्द्र शुक्ल ने वीरगाथा काल काल कहा। हजारीप्रसाद द्विवेदी ने ने वीरगाथा काल कहा। चारणकाल डॉ रामकुमार वर्मा ने कहा। आदिकाल। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा।

Paper Code 9 0 1 0 1 0 1 7

Do Not Write anything in this Portion

आदिकाल के नाम निम्नलिखित हैं-

1- आदिकाल
2- चारणकाल
3- वीरगाथाकाल
4. सिद्ध सामन्तकाल

प्रश्नोत्तर सं० - 1 का (क)

हिन्दी में अनेक बोलियाँ और भाषाएँ है। बोलियाँ इतनी है कि उनकी गिनती तक नहीं है। भाषाओं से अपना देश भरा पड़ा है। भाषाओं से उपभाषाएँ बनी हैं।

Paper Code
91010117

खण्ड - ब

प्रश्नोत्तर सं०- 2

सन्दर्भ = प्रस्तुत पंक्तियाँ आदिकालीन कवि विद्यापति द्वारा रचित है। यह विद्यापति-पदावली द्वारा रचित है।

प्रसंग = प्रस्तुत पंक्तियों में कवि द्वारा राधा के रूप-सौन्दर्य का वर्णन किया गया है। किस प्रकार श्री कृष्ण इनकी शोभा पर मुग्ध हो जाते है।

व्याख्या = कवि कहता है कि राधा के सौंदर्य को देखकर मैं आश्चर्य चकित हो गया। कि इतनी सुन्दर है ऐसा लगता है कि विधाता ने सम्पूर्ण सौन्दर्य को एक स्थान पर इकत्रित कर दिया है। सारे संसार के सौन्दर्य का सार इन्होंने अ राधा में कर दिया। इनके अंग प्रत्यअंग को देखकर कामदेव मूर्च्छित हो गए। और बैचैन हो उठे। करोड़ो कामदेव की शोभा बढ़ाने वाले श्री कृष्ण इनके अंग को देखकर मुग्ध हो गए। कितनी ही लक्ष्मियाँ इनके चरणों में बलिहार जाती है। ऐसी श्री कृष्ण राधा को देखकर मूक हो गए। वह ऐसी अभिलाषा करते है कि ऐसी सुन्दरी के कमल रूपी चरण उनके पास हो तो वह उन्हें गोद में रखकर इनकी रक्षा करें।

Paper Code A D 1 0 1 0 1 T

Do Not Write anything in this Portion

काव्य सौन्दर्य :-

भाषा = मैथिली भाषा
अलंकार = अनुप्रास अलंकार
रस = श्रृंगार रस
गुण = माधुर्य

Paper Code
A 0 1 0 1 0 1 T

11

खण्ड - स

प्रश्नोत्तर सं॰ - 7

तुलसीदास सगुण काव्यधारा के रामभक्ति काव्य के प्रवर्तक कवि है। तुलसीदास राम की आराधना करते है।

जन्म = तुलसीदास के जन्म तिथि के बारे में कोई प्रमाण नहीं है। कुछ विद्वानों का मानना है कि इनका जन्म ऐटा नामक स्थान पर हुआ था।

माता-पिता = तुलसीदास की माता का नाम हुलसी था तथा पिता का नाम आत्माराम दुबे था। तुलसीदास के जन्म के समय 2 दाँत थे। और इन्होंने जन्म के समय राम बोला इसकारण इनका नाम रामबोला रखा गया। इनके माता-पिता इन्हें अशुभ मानते थे इसी कारण इनके माता-पिता ने इन्हें त्याग दिया।

विवाह - इनका विवाह रत्नावली नाम कन्या से हुआ था। यह अपनी पत्नी पर अत्यन्त आशक्त थे। इस प्रकार यह कई बार अपनी पत्नी द्वारा लज्जित किये गए।

मृत्यु = तुलसी दास की मृत्यु वाराणसी में हुई थी।

लोकनायक = तुलसीदास ने हिन्दी का नई दिशा प्रदान की। तुलसीदास अपने समय के लोकनायक थे।

तुलसीदास का लोकनायत्व और समन्वयवाद = तुलसीदास एक लोकनायक थे। अकबर जिस समय का सम्राट था तुलसीदास उसी समय के लोक नायक थे।
तुलसीदास में [illegible] की विराट चेष्टा देखने को मिलती है त हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा वही लोकनायक हो सकता है

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

13

Do Not Write anything in this Portion

X

Paper Code

15

Paper Code

16

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

X

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

18

X

Paper Code

19

Paper Code

20

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

21

X

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

X

Paper Code

Paper Code

24

Do Not Write anything in this Portion